एम.ए. हिंदी पूर्वार्द्ध प्रथम सेमेस्टर

MAHN- 104

आधुनिक गद्य साहित्य

निदेषालय, दूरस्थ षिक्षा

गुरु जम्भेष्वर विष्वविद्यालय विज्ञान और प्रौद्योगिकी

हिसार

एम.ए.हिंदी – आधुनिक गद्य साहित्य	
प्रथम सेमेस्टर	कोर्स कोड़ : एम.ए.एच.एन–104
समग्री संकलन एवं लेखन – डॉ. गीतू सहायक प्रो0 हिंदी	विश्लेषक –
अध्याय–1	**आधुनिक गद्य साहित्य**

अध्याय संरचना

1.1 अधिगम उद्देष्य

1.2 परिचय

1.3 विषय वस्तु के मुख्य बिंदु

- **1.3.1 गोदानः समस्यामूलक उपन्यास के रूप में**
- **1.3.2 प्रेमचंद की नारी भावना**
- **1.3.3 प्रेमचन्द का जीवन दर्शन**
- **1.3.4 गोदान : कृषक जीवन का महाकाव्य**

1.4 विषय वस्तु के आगे का प्रस्तुतीकरण

1.5 प्रगति समीक्षा

1.6 सारांष

1.7 संकेत शब्द

1.8 स्व मूल्यांकन हेतु प्रष्न

1.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रष्नोतर

1.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ एवं अध्ययन साम्रगीस

1.1 अधिगम उद्देष्य

गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय विज्ञान और प्रौद्योगिकी हिसार के दूरस्थ शिखा निदेशलय द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष के चौथा प्रश्न पत्र आधुनिक गद्य साहित्य से

संबंधित पाठ्यक्रम की इकाइयों का अध्ययन करने जा रहे है। आधुनिक गद्य साहित्य का संपूर्ण वर्गीकरण इसके अध्ययन की सुविधा के लिए आवश्यक है। साहित्य के क्षेत्र में जो परिवर्तन, विकास और उतार–चढाव आए, उनके कारण, स्वरूप और परिणाम का अध्ययन हम आधुनिक गद्य साहित्य के अंतर्गत करते है। पाठ्यक्रम की इस पहली इकाई में हम इसी विषय की जानकारी दे रहे है। इस इकाई को पढ़ने से आप, आधुनिक गद्य साहित्य के महत्वपूर्ण विंदुओं से परिचित हो सकेंगे।

- गद्य साहित्य के क्षेत्र से परिचित हो सकेंगे।

1.2 परिचय

इस दिशा में आगे बढ़ने से पहले साहित्य के क्षेत्र को समझना आवश्यक है। उपन्यास के उद्भव और विकास का भी वर्णन किया जा रहा है।

➢ 1.3.1– गोदानः समस्यामूलक उपन्यासकार के रूप में

प्रेमचंद हिंदी साहित्य के एक ऐसे महान साहित्यकार हैं, जो कलम के माध्यम से साहित्य और समाज की सेवा करते हैं। कलम के सिपाही कहलाने वाले प्रेमचंद युग के पथ प्रदर्शक और मार्गदर्शक भी बने। वहीं तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त अनेक समस्याओं को उन्होंने इतनी करीबियत से देखा और स्वयं भोगा भी। इन समस्याओं को उन्होंने अपने साहित्य का सशक्त साधन या यूं कहें कि माध्यम भी बनाया। इन्हीं समस्याओं से ही प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों को लिखने की ऐसी कथावस्तु, ऐसी आधारभूमि खोज निकाली कि गोदान जैसी अमरकृति इस उपन्यास को उन्होंने इसी समस्याओं के इर्द–गिर्द सहजता से बुन दिया।

उपन्यास सम्राट ने मानवीय सुख और दुःख का बिना किसी आडंबर के चित्रण करके न केवल स्वयं को अमर बनाया, बल्कि गोदान जैसी कृति को भी एक महाकाव्यात्मक उपन्यास के रूप में सभी के समक्ष प्रस्तुत किया। समाज में व्याप्त लगभग प्रत्येक समस्या का वर्णन इस साहित्यकार ने बेबाकी से किया है। इस गोदान उपन्यास में चित्रित समस्याएं समाज की समस्याएं बनकर उभरती हैं, तो वहीं भारतीय समाज में परिव्याप्त अनेक समस्याओं को रेखांकित करके उनका पर्याप्त समाधान भी प्रेमचंद प्रस्तुत करते हैं। इस उपन्यास में

जितनी भी समस्याएं चारों ओर व्याप्त दिखाई देती हैं, चाहे वह दहेज की समस्या हो, ऋण की समस्या, या अनमेल विवाह की समस्या हो या फिर शोषण की समस्या इन सभी समस्याओं के इर्द–गिर्द प्रेमचंद समसामयिक समाज का ऐसा कथानक बनाते हैं कि जिसमें पाठक स्वयं मूलभूत समस्याओं का समाधान खोजते हुए नजर आते हैं। इसीलिए गोदान मुंशी प्रेमचंद की एक प्रौढ़तम रचना है। जिसमें अनेक समस्याएं हैं। केवल ग्रामीण ही नहीं, बल्कि शहरी समाज की समस्याओं का सम्मिलित प्रस्तुतीकरण इस उपन्यास में बहुत ही जीवंत और संजीव ढंग से किया गया है।

प्रेमचंद जैसे लेखक समस्याओं को प्रदर्शित करके यह सिद्ध करना चाहते थे कि जब तक समाज में गली–सड़ी व्यवस्थाओं को बदला नहीं जाएगा, यह समस्याएं मानव जाति का शोषण करती रहेंगी। और समस्याओं के बढ़ने से देश को निश्चित रूप से ही खतरा होता है, जिससे भारत का कल्याण संभव नहीं है। इसीलिए प्रेमचंद की इस गोदान कृति समस्याओं का प्रमाणिक दस्तावेज माना जाता है।

गोदान में चित्रित समस्याओं को ग्रामीण और शहरी जीवन की समस्याओं के रूप में अलग–अलग करके प्रस्तुत भी किया गया है ताकि प्रत्येक समाज में व्याप्त समस्याओं का प्रस्तुतीकरण किया जा सके। गोदान में ग्रामीण एवं शहरी जीवन का व्यापक वर्णन किया गया है। दोनों समाज में फैली समस्याओं पर इस ढंग से प्रकाश डाला गया है कि एक ओर उपन्यास में भारतीय गांव एवं किसानों की समस्याएं दिखाई देती हैं, तो वहीं दूसरी ओर शहरी जीवन के अंतर्विरोधों तथा अनेक समस्याओं को अति सुघड़ता से चित्रित किया गया है। यहां विद्यार्थियों की सुविधा के लिए ग्रामीण जीवन में व्याप्त समस्याओं और शहरी जीवन में व्याप्त समस्याओं का अलग–अलग वर्णन किया जा रहा है। ताकि विद्यार्थी बहुत ही सरल तरीके से इन समस्याओं पर सोच विचार करते हुए अपनी दृष्टि को विस्तारित कर सकें। और विद्यार्थियों को प्रश्न समझने में किसी प्रकार की समस्या का सामना करना पड़े। उनकी सरलता को मद्देनजर रखते हुए प्रश्न के प्रथम भाग में ग्रामीण जीवन में व्याप्त समस्याएं प्रदर्शित की जा रही हैं। गोदान की समस्याओं का वर्णन इस प्रकार है

अ– ग्रामीण जीवन की समस्याएं: गोदान की कथावस्तु की पृष्ठभूमि में एक छोटा सा गांव है बेलारी और इसी बेलारी गांव की ही कहानी को उपन्यासकार प्रेमचंद ने प्रदर्शित किया है। ग्रामीण जीवन की एक कथा जो मूलतः होरी और उसकी पत्नी धनिया के जीवन को केंद्र में रखकर प्रस्तुत की गई है। होरी और धनिया जैसे अति साधारण ग्रामीण पात्रों के ईद–गिर्द घूमती यह सारी कथा इस उपन्यास को अमर रचना बना रही है। गांव में एक तरफ जमीदार रायसाहब अमरपाल सिंह हैं,तो दूसरी ओर इसी बेलारी गांव में विभिन्न जातियों के लोग रहते हैं। अधिकांश कृषक हैं, बढ़ई, कुम्हार,साहूकार ब्राह्मण,अहीर,लुहार जाति के लोग बसते हैं। रहन–सहन और उनके पैतृक व्यवसाय,आचार–विचार रीति–रिवाज का उपन्यासकार ने वर्णन करते हुए वहां की समस्याओं को व्यापकता से चित्रित किया है। जिनका समस्याओं का वर्णन इस प्रकार है।

1. शोषण की समस्या– गोदान में होरी जैसे पात्र के माध्यम से शोषण की समस्या को दर्शाया है। किसान एवं ग्रामीण लोगों में शिक्षा और जागरूकता की कमी के कारण अपने अधिकारों का प्रयोग नहीं कर पाते और जागृति के अभाव में पीढ़ी दर पीढ़ी जमीदारों, पूंजीपतियों के शोषण का शिकार होते रहते हैं। यहां सामंतवादी और पूंजीपति व्यवस्था गोदान में परिलक्षित होती है। यद्यपि होरी का प्रत्यक्ष रूप से कोई शोषण नहीं करता, लेकिन इस व्यवस्था के चलते हुए नित्य प्रति वह लुटता रहता है और गांव के तथाकथित नुमाइंदे धर्म की आड़ में उसका शोषण करते हैं। इस उपन्यास में उपन्यासकार ने यह दर्शाया है कि किसान सदैव ऋणग्रस्त रहते हैं अतः ये किसान हमेशा जमीदारों द्वारा शोषित होते रहते हैं। जीवन में कोई सुविधाएं ना होने एवं धनाभाव के चलते स्वयं का शोषण करवाना इनकी मजबूरी बन जाती है, जबकि शोषण करना जमीदारों का अधिकार होने लगता है। दिन ब दिन बेबस व्यक्ति शोषित होने के लिए बाध्य होता है। इन सब समस्याओं का अंकन बखूबी प्रेमचंद ने किया है। यही कारण है की होरी जैसा पात्र शोषण की चक्की में इस उपन्यास के अंत तक पिसता ही रहता है। होरी के अतिरिक्त इस उपन्यास में हीरा, धनिया पुलिया, सिलिया सभी का किसी ने किसी प्रकार से शोषण होता है। शोषण की इस भयावह परिणीति को दर्शाते हुए प्रेमचंद बताते हैं कि अन्न उत्पन्न करने वाला किसान सदैव भूखा ही रहता है। और किसान

इतनी बेचारगी से जीवन जीता है कि रात–दिन, गर्मी–सर्दी में धूप बरसात सभी के थपेड़े सहनकर खून–पसीना एक करके खेतों में अन्न पैदा करता है।

इसी समस्या को इस उपन्यास में रामसेवक अपने शब्दों में इस प्रकार कहता है– थाना पुलिस कचहरी अदालत सब है हमारी रक्षा के लिए। लेकिन रक्षा कोई नहीं करता। चारों तरफ से लूट है। जो गरीब है बेबस है उसकी गर्दन काटने के लिए सभी तैयार रहते हैं यहां तो जो किसान है सभी का नरम चारा है। पटवारी को नजराना और दस्तूरी ने दे तो गांव में रहना मुश्किल। जमीदार के चपरासी और करिंदों का पेट ना भरे तो निर्वाह न हो। थानेदार और कांस्टेबल तो जैसे उसके दामाद हैं। जब उनका दौरा गांव में हो जाए तो किसान का धर्म है कि वह उनका आदर सत्कार करे। नजर नयाज दे। नहीं तो एक रिपोर्ट में गांव का गांव बंध जाए।

यह सही है कि यह शोषण की समस्या प्रेमचंद के युग से भी बहुत पुरानी थी, लेकिन यह शोषण का चक्र इतना अधिक था कि इस ग्राम की दशा बहुत ही दुःखद थी। किसानों के जीवन का सत्य केवल पिसना, घुटना और सहना था। इसी को ही किसान अपनी तकदीर मान चुके थे। शोषण ने किसी भी किसान का पीछा में नहीं छोड़ा था। इस समस्या को प्रेमचंद पूरी सच्चाई के साथ पाठकों के समक्ष लाते हैं। यही उपन्यास की पहली और मूल समस्या है।

2. कर्ज की समस्या– गोदान उपन्यास में दूसरी बड़ी समस्या का चित्रण करते हुए प्रेमचंद ने कर्ज की समस्या को उभारा है। कर्ज एक ऐसी समस्या है, जिसमें पूरा का पूरा गांव घुन की तरह पिस रहा है। गोदान की मूल समस्या ऋण संबंधी समस्या है। कर्ज के चंगुल से भोला भाला किसान आजीवन निकल नहीं पाता और जमींदार इन भोले वाले किसानों का सदैव शोषण करते ही रहते हैं। जिसे चित्रित करने में उपन्यासकार ने अद्भुत सफलता हासिल की है। होरी जैसे भोले भाले कृषक का जमीदार शोषण करते है। लगान, नजराना, बेगार और शगुन के नाम पर न जाने किस–किस तरह से जमीदारों द्वारा किसानों को लूटा जाता है। और वह बेचारे विवश होकर बेगार भरते ही रहते हैं। जमीदारों के ऋण से मुक्ति

पाने के लिए वे गांव के छोटे–छोटे साहूकारों से ऋण लेते हैं। इसीलिए ही उन्हें पुराने ऋण को चुकाने के लिए हर बार नया ऋण लेना पड़ता है। यही कारण है कि गोदान का मुख्य ग्रामीण पात्र इसी कर्जे से मुक्ति पाने के लिए, ऋण की समस्या से निजात पाने के लिए अपनी बेटी रूपा को एक अधेड़ व्यक्ति से ब्याह देता है और बदले में 200 रुपए प्राप्त करता है। इस घटना का वर्णन करते हुए उपन्यासकार इस प्रकार दर्शाया है– ष्होरी ने रुपए लिए तो उसका हाथ कांप रहा था। उसका सिर ऊपर न उठ सका। मुंह से एक शब्द न निकला। जैसे अपमान के गड्ढे में गिर पड़ा हो और गिरता चला जाता हो। आज तीस साल तक जीवन से लड़ते रहने के बाद वह परास्त हुआ है और ऐसा परास्त हुआ कि मानो उसको नगर के द्वार पर खड़ा कर दिया है, जो आता है उसके मुंह पर थूक देता है।श्

ऋण के कारण होरी को इतना अपमान का सामना करना पड़ा, कि वह ऋण के बोझ से इतना दबा हुआ था कि एक दिन अपने खेत और बैलों से भी वह हाथ धो बैठता है। और किसान से मजदूर बन जाता है। केवल होरी ही नहीं, इस गांव के अन्य किसान भी महाजनों के ऋण के बोझ के नीचे दबे हैं। सभी का ऋण बढ़ ही रहा है, कभी चूकता नहीं है। ऋण की चिंता इसलिए अकेले ही होरी को नहीं है। यही कारण है कि उसे संतोष इस बात का है कि यह विपत्ति अकेले उसी के सिर पर नहीं थी बल्कि गांव में सभी किसानों का एक जैसा ही हाल था। इसी को प्रेमचंद ने इस प्रकार दर्शाया है– ष्आषाढ़ का महीना बीत गया और वर्षा न हुई। सहसा एक दिन बादल उठे और आषाढ़ का पहला डोगरा गिरा। किसान खरीफ की फसल बोने के लिए हल लेकर निकले कि कारकुन ने कहला भेजा जब तब बाकी न चुक जाएगी, किसी को खेत में हल न ले जाने दिया जाएगा। किसानों पर जैसे वज्रपात हो गया। सभी गांव के महाजन के पास रुपए लेने को दौड़े। इस तरह सभी किसानों को जमीदारों से ऋण लेकर ही रुपया अदा करना पड़ता है। और भी सभी ऋण लेने दौड़कर ऐसे महाजनों के पास जाते हैं। पटेश्वरी, दातादीन, झींगुरी सिंह दुलारी, नोखेराम और मंगरुशाह आदि भी शोषण करते हैं। यहां तक की सभी किसानों की फसल खलियानों से उठ जाती है और वह फिर भी कर्ज में डूबे रहते हैं। इसी उपन्यास में वर्णन है कि दशहरे के दिन रायसाहब के यहां धनुषयज्ञ में सभी गांव वालों को शगुन देना जरूरी था। यहां ये उदाहरण भी उनके बढ़ते ऋण को दर्शाता है। शगुन देने के लिए वह किसी न किसी तरह से पैसों का इंतजाम करते हैं और उन्हें नजराना देने के लिए धन देना ही पड़ता है। यहां

तक की बिरादरी और पंचों का कहना मानना उनके लिए आदेश बराबर है। इसीलिए गांव के समस्त किसान निरंतर ऋण की गहरी खाई में डूबते चले जाते हैं। जिसका वर्णन प्रेमचंद ने इस उपन्यास में अति सजीवता से किया है।

3. जाति–पाति की समस्या– वैसे तो जाति पाति की समस्या अनादि काल से ही चली आ रही है। जिसका वर्णन साहित्य में अन्यत्र देखने को मिलता है। धार्मिक अंधविश्वासों ने इस समस्या को भली भांति पोषित किया है। गोदान में भी प्रेमचंद ने समस्या को बेहद प्रमुखता से उभारा है। मातादीन एक ब्राह्मण का लड़का है पर वह चमार जाति की लड़की सिलिया से प्रेम करता है और उपन्यास में एक जगह दर्शाया है कि इसी कारण मातादीन को गांव वाले दंड देते हैं। गांव वाले मातादीन का जनेऊ तोड़ देते हैं और उसके मुंह में मांस का टुकड़ा डालकर उसका धर्म भ्रष्ट कर देते हैं। इस को उपन्यास में यूं चित्रित किया है। माता दीन कै करने के बाद निर्जीव सा जमीन पर लेट गया। मानो उसकी कमर टूट गई हो। मानो डूब मरने के लिए चुल्लू भर पानी खोज रहा हो। उस हड्डी के टुकड़ों ने उसके मुंह को ही नहीं उसकी आत्मा को भी अपवित्र कर दिया था।[८]

इस तरह इस उपन्यास में जाति पाति की समस्या को दर्शाया गया है। पिछड़ी जाति के लोगों का जीवन किस तरह से संघर्षरत था। प्रेमचंद स्वयं जाति पाति की समस्या के प्रति बड़े आक्रोशित दिखाई देते हैं। इस उपन्यास में उनकी दुर्दशा का चित्रण करते हैं हुए प्रेमचंद की दृष्टि केवल समस्या को उभारने तक ही सीमित नहीं रहती है बल्कि वह अनेक स्थानों पर जाति पाति का विरोध करते हुए भी दिखाई देते हैं। प्रेमचंद मानते हैं कि भेदभाव करने वालों को सबक मिलना आवश्यक है। इसीलिए गोदान में इस समस्या पर लेखक ने पर्याप्त चिंतन मनन किया है।

4. अनमेल विवाह एवं अंतरजातीय विवाह की समस्या– प्रेमचंद ने इस उपन्यास में कुछ छोटी–छोटी उपकथाओं और सहकथाओं के माध्यम से अंतरजातीय विवाह की समस्या और

अनमेल विवाह की समस्या को प्रस्तुत किया है। उस समय के समाज में अनमेल विवाह मान्य नहीं था और साथ ही अंतरजातीय विवाह करना भी एक बड़ी समस्या थी। गांव के उस वातावरण में यदि कोई अन्य जाति या दूसरी जाति में विवाह करता है तो समाज इस प्रकार का विवाह करने वालों का हुक्का पानी बंद कर देता था। यहां तक कि उन्हें बिरादरी बाहर कर दिया जाता था और समाज से निकाल भी दिया जाता थ। उन्हें इसका भारी प्रायश्चित करना पड़ता था। उपन्यास में गोबर झुनिया से विवाह करता है। गोबर झुनिया का परस्पर प्रेम हो जाता है। और गोबर गर्भवती झुनिया को अपने माता–पिता के पास छोड़कर शहर भाग जाता है। तब एक बार होरी और धनिया भी झुनिया को रखने के लिए तैयार नहीं होते हैं। वे कहते हैं कि हमें इस बात का डर है कि इस प्रकार का अंतरजातीय विवाह समाज और बिरादरी से कहीं हमें भी बेदखल न कर दे। लेकिन होरी और धनिया का ह्दय झुनिया को देख कर द्रवित हो जाता है। वे दयालु हैं और झुनिया को शरण देते हैं। और इस बात के लिए वह मन में यह बात बैठा लेते हैं कि भले इसका हमें भयंकर परिणाम भुगतान पड़े। इसी उपन्यास में इसी घटना के फलस्वरुप होरी और धनिया को जाति से अलग कर दिया जाता है। और पंचों द्वारा सौ नकद और तीस मन अनाज का दंड भी लगाया जाता है। जिसको सहन करना होरी के लिए अत्यंत कठिन होता है। लेकिन फिर भी होरी को गांव बिरादरी की मर्यादा रखते हुए दंड स्वीकार करना ही पड़ता है। अन्तरजातीय विवाह गांव में एक नहीं बल्कि अनेक हैं। मातादीन भी सिलिया से अंतरजातीय विवाह करता है। पटवारी पाटेश्वरी एक कहारिन से, तो झींगुरी सिंह एक ब्राह्मणी से अंतरजातीय विवाह करता है। अंतर्जातीय विवाह और अनमेल विवाह, विधवा विवाह जिनका वर्णन इस उपन्यास में हुआ है। इनके कारण तो बहुत बड़े हैं। अशिक्षा, गरीबी, धन का अभाव, असमर्थता इसके मूल हैं। इसी के कारण ही होरी अपनी बेटी रूपा का अनमेल विवाह करता है। वह अपनी छोटी बेटी का विवाह एक अधेड़ व्यक्ति से करता है। यह उस समय की यह कैसी समस्या थी, जिसे पूरी तरह से अनैतिक माना जा सकता है। इसीलिए सुपन्यास के लेखक प्रेमचंद इसके विरोध में दिखाई देते हैं।

5. धार्मिक समस्या– प्रेमचंद ने अपने उपन्यास गोदान में धार्मिक समस्या कोभी बखूबी व्यक्त किया है। प्रेमचंद का मानना है कि धर्म भी एक समस्या है, जो गरीब लोगों को निरीह प्राणी

के रूप में जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य करती है। होरी के लिए धर्म जीवन मरण का प्रश्न बन जाता है। जबकि गोबर की आस्था धर्म से हटी हुई नजर आती है। वह अपने पिता को भी धर्म का विरोध करने के लिए कहता है। लेकिन होरी धर्म के आवरण में इतना छिपा हुआ है, कुछ अनिष्ट ना हो, ऐसी लिए वह धर्म के आवरण से स्वयं को ढक लेता है। और धर्म और मर्यादा की आड़ में निरंतर ऋणग्रस्त होता चला जाता है। गांव के अन्य लोगों की तरह होरी भी धर्म में आस्थावान होने के कारण खुद को ही अपनी स्थिति के लिए दोषी मानता है। जबकि उसका पुत्र गोबर दातादीन के रुपयों का नियमानुसार ब्याज देना चाहता है, तो दातादीन धर्म और ब्राह्मण की दुहाई देने लगता है। तब धर्म से भयभीत होकर होरी गोबर का विरोध करता है और उसे समझाना है कि वह विद्रोह के मार्ग से हट जाए, क्योंकि धर्म का विरोध करना जीवन को नष्ट करने के बराबर होता है। यही नहीं धर्म के नाम पर गांव के पंडे, पंडित और पुजारी निरंतर लोगों का शोषण करते रहते हैं। प्रेमचंद ने लोगों को धर्मभीरु दर्शाया है और होरी जैसे पात्र के माध्यम से इसकी परिणिति दिखाई है। वहीं गोबर के माध्यम से पाठक को चेताया भी है।

ब– शहरी जीवन की समस्याएं–

जैसा की उपरोक्त वर्णन में पहले भी बताया जा चुका है कि प्रेमचंद ने अपने उपन्यास गोदान में ग्रामीण जीवन की तरह ही शहरी जीवन की भी अनेक समस्याओं को उभारा है। भले ही ग्रामीण जीवन की समस्याएं गोदान पर थोड़ी हावी होती दिखाई देती हों, लेकिन कहीं ना कहीं नगरीय जीवन की समस्याएं भी इस उपन्यास को व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती हैं। महानगरों और शहरों की अपनी समस्याएं हैं और इस उपन्यास के शहरी पात्र उन समस्याओं से घिरे दिखाई देते हैं। इन्हीं शहरी पात्रों के क्रियाकलाप, अन्य शहरी समस्याएं दिखाते शहरी कथाओं को दृष्टि दी है। शहरी कथाएं कुछ गौण हैं तो कुछ मुख्य रूप से विभिन्न शहरी जीवन की विभिन्न समस्याओं को चित्रित करती हैं जिनका उल्लेख निम्नलिखित आधारों पर किया जा सकता है।

1. मिल मजदूरों की समस्या— गोदान उपन्यास में मिस्टर खन्ना चीनी मिल के मालिक है। यहां मजदूरों ने उचित वेतन न पाने के कारण मिल में हड़ताल की हुई है। मजदूरों का मानना है कि मिस्टर खन्ना काम के एवज में मजदूरी कम देते हैं। इसीलिए उन्हें हड़ताल का रूप धारण करना पड़ा। मजदूरों की हड़ताल भयंकर रूप धारण कर लेती है और सभी मजदूर एकजुट होते हुए मिल में आग लगा देते हैं। जिसका प्रभाव मिल मालिक मिस्टर खन्ना पर तो पड़ता ही है तो वहीं मजदूरों पर भी इसका प्रभाव अछूता नहीं रहता। मजदूरों की नौकरी चली जाती है गोबर भी इस हड़ताल में मजदूरों का पूरा साथ देता है। प्रेमचंद इस समस्या के आलोक में दर्शाते हैं कि शहरी लोग सिद्धांतवादी बनते हुए मजदूरों को अक्सर बहका देते हैं। अतः मजदूर बहकावे में आकर भूख हड़ताल कर बैठते हैं, जिसका परिणाम भयानक निकलता है। प्रेमचंद ने दर्शाया है कि मजदूरों के जीवन के अपने संघर्ष है। उनके जीवन की समस्याएं इतनी विचित्र है कि वह अपने अधिकारों को लेकर लड़ते प्रतीत होते हैं। इस समस्या का चित्रण चीनी मिल के मजदूरों के माध्यम से प्रेमचंद ने बखूबी किया है।

2. जमीदार वर्ग की समस्या— यद्यपि इस आलोच्य उपन्यास में गांव के लोग जमीदारों के शोषण का शिकार होते हैं। यह इस उपन्यास का एक अलग पक्ष है। वही प्रेमचंद पक्षपाती नहीं होते हैं। वे दोनों पक्षों की समस्याओं का खुलकर विरोध करते हैं, चित्रण करते हैं और शहरी समस्याओं के अंतर्गत बेहद ईमानदारी से जमीदार वर्ग की समस्याओं को भी प्रदर्शित करते हैं। प्रेमचंद कहते हैं कि जमीदार वर्ग की भी बहुत सी अपनी समस्याएं हैं, वह भी बड़े अफसर को खुश करने के लिए रिश्वत देते हैं। यह रिश्वत या नजराना अप्रत्यक्ष रूप से जमीदारों के शोषण की ओर इंगित करता है। जमीदार भी ठीक उसी प्रकार दुःखी हैं, जिस प्रकार इस उपन्यास में किसान वर्ग। यद्यपि रायसाहब के पास सभी ऐशो आराम के साधन उपलब्ध हैं।लेकिन फिर भी उनका अंतरण अत्यंत दुःखी है। इस स्थिति को गांव के लोग भी नहीं समझ पाते हैं। अपनी स्थिति का वर्णन करते हुए राय साहब अमरपाल सिंह कहते भी हैं— षजिसे दुश्मन के मारे सारी रात नींद ना आती हो। जिसके दुःख पर सब हंसे और रोने वाला कोई ना हो। जिसकी चोटी दूसरों के पैरों के नीचे दबी हो। जो भोग विलास के नशे

में अपने को भूल गया हो। जो हुक्काम के तलुए चाटता हो और अपने अधीनों का खून चूसता हो उसे मैं सुखी नहीं कहता। वह तो संसार का सबसे अभागा प्राणी है।

राय साहब को इस बात का भी आभास हो जाता है कि समाज से जमीदारी प्रथा जल्द ही समाप्त हो जाएगी। इसके माध्यम से प्रेमचंद ने जमीदार वर्ग की समस्या का समाधान प्रस्तुत किया है। इस संदर्भ में वे रायसाहब से कहलाते हैं– ‘अगर सरकार हमारे इलाके छीन कर हमें अपनी रोजी के लिए मेहनत करना सिखा दे तो हमारे साथ उपकार करें। क्योंकि बहुत जल्दी हमारे वर्ग की हस्ती मिटाने वाली है। इस प्रकार प्रेमचंद ने जमींदारों की अपनी अलग ही समस्याओं का वर्णन किया है।

3. नारी के अधिकार की समस्या– प्रेमचंद जब इस उपन्यास की पृष्ठभूमि को लिख रहे थे तब भारत में बहुत कुछ हद तक नारी शिक्षा की स्थिति में सुधार आने लगा था। इस उपन्यास की शहरी स्त्री पात्र में मिस मालती इंग्लैड से पढ़कर डॉक्टर बनती है।जाहिर है कि उसके ऊपर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव दिखाई देता है। लेकिन प्रेमचंद नारी शिक्षा के विषय में पाश्चात्य प्रभाव को स्वीकार नहीं करते। प्रेमचंद नारी शिक्षा के विरोधी भी नहीं है। लेकिन वह मानते हैं कि नारियों के लिए ऐसी शिक्षा होनी चाहिए, जो केवल पैसा कमाने और केवल विलासप्रिय हो जाने के लिए ना हो। वे चाहते थे कि नारी समाज को स्वतंत्रता और शिक्षा तो प्राप्त हो लेकिन पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण किसी तरह से भी ना किया जाए। समाज में शिक्षित नारी के अधिकारों की भी अपनी समस्याएं हैं जिस पर प्रेमचंद ने प्रकाश डाला है।

4. स्वच्छंद प्रेम की समस्या– प्रेमचंद ने नगरीय जीवन की एक समस्या स्वच्छंद प्रेम की समस्या पर भी प्रकाश डाला है। मिस मालती जैसी पात्र के जरिए उन्होंने दिखाया है कि मिस मालती जैसी स्त्री तितली के समान व्यवहार करती है। वह अपने जीवन में स्वच्छंदता और स्वतंत्रता में विश्वास रखती है और लोगों को अपनी बातों के जाल में उलझाए रखती है। उसमें संकोच नहीं है लेकिन प्रेमचंद को स्वच्छंद प्रेम उचित प्रतीत नहीं होता वे मालती के जीवन में परिवर्तन कर उसे सेवा और त्याग की प्रतिमा बना देते हैं। प्रेमचंद की नजर में ऐसी नारी भारतीयता का प्रतीक नहीं हो सकती। इसलिए उपन्यास के अंत में प्रेमचंद ने

उसके जीवन को पूर्णतः परिवर्तित करते हुए मालती को त्याग और सच्चे प्रेम की प्रतिमा बनाकर चित्रित किया है। वह विलासिनी नहीं, बल्कि त्यागशीला के रूप में चित्रित की गई है। उनकी दृष्टि में सेवा और त्याग ही नारी के सबसे बड़े कर्तव्य हैं। उपन्यास में मिस मालती के जरिए उन्होंने स्वच्छंद प्रेम की समस्या को दर्शाया है।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रेमचंद ने गोदान में अनेक समस्याओं की ओर संकेत किया है। विभिन्न समस्याओं के निरूपण के साथ–साथ प्रेमचंद ने समाधान की ओर भी इंगित किया है तो दूसरी तरफ सामंती वर्ग की समस्याओं को भी यथार्थता के साथ चित्रित किया है। कहा जा सकता है कि समस्याओं के आलोक में प्रेमचंद ने उसका आदर्शवादी समाधान भी खोजा है। इस दृष्टि से गोदान प्रेमचंद का प्रमुख दस्तावेज है।

1.3.2 – प्रेमचंद की नारी भावना

मुंशी प्रेमचंद का उपन्यास गोदान सन 1936 में प्रकाशित हुआ था और उस समय समाज में नारी के विषय में अनेक भावनाएं परंपरागत रूप से चली आ रही थी। नारी की स्थिति उस समय भारतीय समाज में सोचनीय थी। एक ओर देखा जाए तो प्राचीनतम युग में नारी की बहुत महत्ता रही है, लेकिन मध्य युग में उसके मान सम्मान में कमी देखी जा सकती है। उपन्यासकार प्रेमचंद का मानना है कि नारी इस सृष्टि की सबसे श्रेष्ठतम कृति है और संसार की सार्थकता इस बात में है कि नारी और पुरुष दोनों ही मिलकर समाज को बेहतर बनाने में योगदान दे सकते हैं। इस उपन्यास के माध्यम से यही सब प्रेमचंद ने प्रदर्शित करने का प्रयास किया है कि सृष्टि का विकास पुरुष और स्त्री दोनों से ही संभव है और दोनों ही अपने–अपने क्षेत्र में सृजन करने में समर्थ है। हालांकि यह उपन्यास ग्रामीण और शहरी दो कथाओं को समानांतर लेकर चलता है। दोनों ही परिवेश में ग्रामीण नारी पात्र और शहरी नारी पात्रों की अपनी–अपनी कहानी और अपने–अपने ही संघर्ष और भागीदारी है। प्रेमचंद नारी के विविध रूपों का अंकन आलोच्य उपन्यास में श्रेष्ठता से करते हैं। प्रेमचंद द्वारा निरूपित नारी की विविध भावनाओं को निम्न आधारों पर समझा जा सकता है।

1. उपन्यास के नारी पात्र– गोदान एक सामाजिक उपन्यास है, जिसमें नारी पात्रों की यथार्थ समायोजना दिखाई देती है। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए सर्वप्रथम ग्रामीण नारी पात्रों की चर्चा यहां की जा रही है।

ग्रामीण पात्रों में धनिया झुनिया सोना रूपा आदि कई नारी पात्र हैं, जिसमें धनिया भारतीय आदर्श परंपरा से पोषित पात्र है। झुनिया अंतरजातीय विवाह करती है। सिलिया मातादीन की प्रेमिका है। होरी की दोनों पुत्रियां सोना और रूपा विवाहित हैं। सबका जीवन विविधता लिए हुए हैं। इन ग्रामीण पात्रों को ग्रामीण परिवेश के अनुसार यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया गया है। वहीं शहरी परिवेश में रहने वाली स्त्रियां मिस मालती मिसेज खन्ना, मीनाक्षी और सरोज जैसी महिलाएं स्वतंत्र है और पूरी तरह आत्मनिर्भर हैं। वह शहरी परिवेश में ही जीवन की रही है और अपने ही अनुसार वैवाहिक बंधनों में बांधना चाहती हैं। स्वतंत्र विचारों की स्त्रियां अपने अधिकारों के प्रति भी उतनी ही जागरुक है। इसका वर्णन प्रेमचंद ने अपने उपन्यास में नारी पात्रों के वर्णन करते हुए सूक्ष्मता से दर्शाया है।

2. आदर्शमयी नारी– प्रेमचंद की पहचान एक सुधारवादी और आदर्शवादी लेखक के रूप में जान जाती है। उनके लिखे अनेक उपन्यासों में उनका समाजसुधारक रूप सामने आता है क्योंकि प्रेमचंद जी जिस समय लिख रहे हैं उस समय नारी की जो दुर्दशा थी उसको चित्रित करते हुए प्रेमचंद उनसे जुड़ी अनेक समस्याओं को भी प्रदर्शित करते हैं। अनमेल विवाह, विधवा विवाह, विजातीय विवाह अवैध संबंध आदि अनेक आधारों पर नारी के दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं। आदर्शवादी लेखक होने के नाते वे नारी के आदर्श रूप को विशेष प्रोत्साहित करते हैं। यही कारण है कि गोदान में खुर्शीद नामक पात्र नारी के आदर्श को पुरुष से अधिक ऊंचा मानते हैं तथा नारी को अत्यंत धैर्यवान समझते हैं। वही प्रोफेसर मेहता भी नारी के प्रति बहुत आदर्शात्मक विचार रखते हैं, जिसे प्रस्तुत करते हुए प्रेमचंद प्रोफेसर मेहता से कहलवाते हैं– ष्संसार में जो कुछ सुंदर है, उसकी प्रतिभा को मैं स्त्री कहता हूं। मैं उससे यह आशा रखता हूं कि मैं उसे मार ही डालूं तो भी प्रतिहिंसा का भाव उसमें ना आए। अगर मैं उसकी आंखों के सामने किसी स्त्री को प्यार करूं तो भी उसकी ईर्ष्या ना जागे। ऐसी नारी पाकर मैं उसके चरणों में गिर पडूंगा और उस पर अपने को अर्पण कर दूंगा।ष

प्रोफेसर मेहता खुद भी ऐसी पत्नी की आशा रखते हैं, जो आदर्श की प्रतिमूर्ति हो। क्योंकि लेखक की सोच ही प्रोफेसर मेहता की सोच से आकर के मिलती है। वे मानते हैं कि आदर्श नारी ही मनुष्य को सफलता की ओर अग्रसर करती है। यही कारण है कि प्रेमचंद नारी जागरण के समर्थक प्रतीत होते हैं और स्वयं नारी को पुरुष का आदर्श मानते हैं।

3. नारी का शिक्षित रूप— प्राचीन काल की अपेक्षा आधुनिक काल में नारी का शिक्षित रूप सामने आता है पश्चिमी देशों में नारी शिक्षा को लेकर के अनेक सकारात्मक कदम उठाए गए हैं जिसका प्रभाव धीरे—धीरे भारतीय समाज और नारी जगत पर भी पड़ता दिखाई देता है। क्योंकि पश्चिम में नारी शिक्षा अनिवार्य थी। शिक्षित भारतीय समाज के लिए स्त्री शिक्षा के प्रति धीरे—धीरे जागरूकता आने लगी। उपन्यास की शिक्षित नारी पात्र मिस मालती और सरोज, जिन पर पाश्चात्य प्रभाव है, वह पश्चिम से शिक्षा ग्रहण कर भारत आती हैं। स्वयं प्रोफेसर मेहता भी नारी शिक्षा के समर्थक हैं, उनके अनुसार नारी को शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। वे शिक्षित नारी के प्रबल समर्थक दिखाई देते हैं। उनका मानना है कि एक शिक्षित नारी एक स्वस्थ समाज को चलाने में सक्षम है। अपनी संतति में नैतिक गुणों तथा शिक्षा के गुणों को प्रसारित करती है। लेकिन प्रेमचंद मानते हैं कि पश्चिमी सभ्यता का जो प्रभाव नारियों पर पढ़ रहा है, वह अपनाने योग्य नहीं है। समाज निर्माण में जो सहयोग नारियां दे सकती हैं, वह विद्यावती शिक्षित नारियों ही दे सकती हैं। प्रो मेहता के अनुसार— ष्देवियों को शक्ति की कोई जरूरत नहीं, उसमें पुरुषों से अधिक शक्ति है। अगर वह विद्या और वह शक्ति आप ही ले लेगी तो संसार विध्वंस बन जाएगा। आपकी विद्या आपका अधिकार हिंसा और विध्वंस में नहीं। सृष्टि और पालन में है।

4. कर्तव्यपरायण नारी— यद्यपि नारी के प्रति प्रेमचंद का दृष्टिकोण सबसे अलग था। उन्होंने न तो नारी को पुरुष की बंदिनी बनना स्वीकार किया और ना ही उसे पूरी तरह से पश्चिमी सभ्यता में ढल जाने की छूट दी। जबकि प्रेमचंद चाहते थे कि नारी अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए अपने साथ भारतीय संस्कृति को भी जीवित रखने का प्रयास करे। प्रेमचंद नारी का प्रथम कर्तव्य सेवा को मानते हैं। मिस्टर मेहता उपन्यास में वूमेंस लीग के समारोह

में भाषण देते हुए इसी बात पर बल देते हुए कहते हैं कि ष्सच्चा आनंद सच्ची शांति केवल सेवावृत्त में है। वही अधिकार का स्रोत है, वही शक्ति का उद्‌गम है। सेवा ही में सीमेंट है जो दंपति को जीवन पर्यंत स्नेह और साहचर्य में जोड़े रखता है। जिस पर बड़े–बड़े आघातों का कोई असर नहीं होता। जहां सेवा का अभाव है, वहीं विवाह विच्छेद है, परित्याग है, अविश्वास है।ष हालांकि यदि भारतीय समाज में देखा जाए तो नारी में सेवा भावना और त्याग की भावना अत्यंत प्राचीन काल से ही रही है। जिसके कारण वह पुरुषों से भी आगे निकल गई है। यही कारण है कि प्रेमचंद बताते हैं कि नारी की महान सेवा ही उसके जीवन का मूल आधार है। इसीलिए प्रोफेसर मेहता यही भावना बार–बार मालती में भरना चाहते हैं, लेकिन कहीं ना कहीं उन्हें मिस्टर मेहता को मालती में सेवा का अभाव दिखाई देता है। उपन्यास के अंत में मिस मालती अपनी सेवा भावना का परिचय देता है।

5. नारी का पत्नी रूप– गोदान उपन्यास में नारी का पत्नी रूप दिखाई देता है। धनिया होरी की पत्नी है। उनका जीवन आदर्श दांपत्य जीवन का एक उदाहरण है। वह पति धर्म का पालन कर रही है। शहरी जीवन में गोबिन्दी एक ऐसी नारी है, जिसमें पतिव्रता गुण दिखाई देते हैं। गोदान में नारी का दांपत्य जीवन वैसे सुखी ही है। चाहे वह विधवा झुनिया हो या सिलिया हो, दांपत्य जीवन में खुश दिखाई देती हैं। मिस मालती भी कहीं ना कहीं अपने जीवन को प्रोफेसर मेहता के साथ बांधकर ही सुख के सपने देखती है। नारी के लिए दांपत्य जीवन की पत्नी रूप की परिकल्पना प्रेमचंद ने उसकी सुख और शांतिपूर्ण भविष्य के लिए की थी। क्योंकि प्रेमचंद का मानना है कि सच्चा प्रेम यदि कहीं है तो दांपत्य जीवन में ही है। यहां तक उन्होंने विवाह को भी आत्मसमर्पण माना है। और विवाह दाम्पत्य जीवन में सुख जीवन की सार्थकता है। गोदान में नारी पत्रों के जरिए उनके पत्नी रूप को दर्शाते हुए प्रेमचंद ने नारी के निस्वार्थ समर्पण को सच्चे दांपत्य का आधार माना है। वे मानते हैं कि पत्नी के रूप में नारी अनेक गुणों से संपन्न तथा महान गुणों का आचरण करने वाली होनी चाहिए और पत्नी को सुचरित्र और उसका व्यवहार समाज के लिए कुशल होना चाहिए। यद्यपि उपन्यास में गोविंदी के व्यवहार में व्यवहार कुशलता दिखाई नहीं देती। जब मिस्टर खन्ना के चीनी मिल में आग लग जाती है तो उनका दांपत्य जीवन में भी बिखराव आने

लगता है। लेकिन बाद में गोविंदी के दांपत्य जीवन में और उसके रिश्तों में सुधार दिखाई देता है नई कि पत्नी रूप को प्रेमचंद ने बहुत ही स्पष्ट से अंकित किया है।

6 नारी का मातृत्व रूप– प्रेमचंद ने नारी के मातृत्व रूप को बहुत ही महत्वपूर्ण माना है। क्योंकि समाज में बहुदा देखा गया है कि नारी का सर्वोत्तम रूप उसका मातृत्व है। इसी रूप को श्रेष्ठ मानते हुए प्रेमचंद उपन्यास में दिखाते हैं कि गोविंदी एक आदर्श माता है और प्रोफेसर मेहता गोविंदी के मातृत्व की महत्ता को समझते हैं और एक स्थान पर रहते भी हैं कहते भी है– ष्मातृत्व महान गौरव का पद है और गौरव के पद में कहीं अपमान अधिकार और तिरस्कार नहीं मिलता। माता का काम जीवन देना है। प्रेमचंद की मान्यता है कि माता जीवनदायनी है वह जीवनी शक्ति है। नारी तो मात्र माता है। नारी के बाद सभी रूप तो माता के उपक्रम अथवा उपरूप है। मातृत्व शक्ति के संदर्भ में प्रेमचंद लिखते है कि ष्मातृत्व संसार में सबसे बड़ी साधना सबसे बड़ी तपस्या सबसे बड़ा त्याग और सबसे महान विजय है।ष

इस तरह से प्रेमचंद की नारी भावना में मातृत्व सर्वप्रथम आता है। प्रेमचंद के अनुसार भारतीय परिवेश में नारी सदा सम्मान और श्रद्धा की पात्र रही है। उसने ही एक ओर अपने को पुरुष के लिए समर्पित किया है तो दूसरी ओर संतति के लिए त्याग सेवा और बलिदान दिए हैं। इसीलिए प्रेमचंद नारी के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए नारी के गुणों को शिव सत्य और सुंदर मानते हैं। इसीलिए उन्होंने प्रस्तुत उपन्यास में नारी के गुणों की मुक्त कंठ करने से प्रशंसा की है। यद्यपि प्रेमचंद ने समाज में पुरुष और नारी के अंतर को बड़ी सूक्ष्मता से देखा था। इसलिए गोदान में इस पुरुष और स्त्री के अंतर को उन्होंने बहुत से स्थानों पर चित्रित भी किया है। प्रेमचंद ने सूक्ष्मता से देखा और नारी को इतने उच्च स्तर पर पहुंचा दिया कि भारतीय नारी का त्याग समर्पण सेवा दया ममता इस उपन्यास में नारी के गुणों में स्वयं ही समाहित होने लगती है।

निष्कर्षतरू यही कारण है कि प्रेमचंद ने समस्त उपन्यास में नारी भावना को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया है। यद्यपि गोदान में कथा का विस्तार अन्य घटनाओं की ओर भी झुकता है

लेकिन वही प्रेमचंद की नारी भावना के दिग्दर्शन भी जगह–जगह इस उपन्यास में व्यापक रूप से होते रहते हैं। इसीलिए नारी को विविध रूपों में चित्रित कर प्रेमचंद ने भारतीय नारी की श्रेष्ठता को सिद्ध किया है। यही गोदान जैसे उपन्यास की सफलता का कारण भी है।

1.3.3 – प्रेमचन्द का जीवन दर्शन

इस प्रश्न में उपन्यासकार प्रेमचन्द का जीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण का विस्तार से उल्लेख किया जा रहा है। भारतीय संस्कृति विश्व की अति प्राचीन संस्कृति है। इस संस्कृति ने न केवल भारत वरन् समस्त विश्व को जीवन जीने की कला सिखाई है। यही भारत का जीवन–दर्शन है, जिसने मानव के लिए उन्नति के नए द्वार खोल दिए है। यदि अकेले जीवन–दर्शन की बात करें तो सरल रूप यहां दर्शन को जीवन से जोड़ कर देखते हैं। वैयक्तिक स्वरूप को बौद्ध दर्शन, जैन दर्शन, चार्वाक दर्शन आदि के माध्यम से समझा जा सकता है। इन्हीं दर्शनों में भारतीय जीवन–दर्शन का सार छिपा हुआ है। यहां विद्यार्थियों को समझाते हुए उन्हें जीवन के विषय में बताना अनिवार्य है। जीवन वह नैसर्गिक शक्ति है जो प्राणियों, जीवों और प्रकृति आदि के अंगों से युक्त होकर मानव को सक्रिय बना देती है। दर्शन समस्त ज्ञान तथा अनुभवों को एक पूर्ण प्रणाली में संयुक्त करने के प्रयत्न का नाम है। अतएव दर्शन से तात्पर्य सूक्ष्म निरीक्षण से है। एक आलोचक ने दर्शनशास्त्र के संबंध में प्रेमचंद की दृष्टि को लेकर लिखा है, दर्शन की बहुत सूक्ष्म ऐसी गहराई जो बुद्धि को चमत्कृत करें इसमें अधिक ना हो तो जीवन के प्रति व्यावहारिक दृष्टिकोण का जो सहज ज्ञान इसमें पाया जाता है वह प्रेमचंद की विशेषता है। यह विचार यह सब घटनाएं यह सब जीवन दृष्टि प्रेमचंद ने जीवन के अनुभव से प्राप्त की है। किसी भी दार्शनिक की पुस्तकों से नहीं। यही कारण है कि गोदान में उनके अनुभव को प्रस्तुत करने वाला एक पात्र दिखाई देता है, जो दर्शन शास्त्र के ज्ञाता है। पेशे से प्रोफेसर हैं, नाम है प्रोफेसर मेहता।

विद्यार्थी इस बात को समझें कि जीवन–दर्शन उस शक्ति का नाम है जो विविध प्रकार के साहित्य को अमरता प्रदान करती है। जीवन–दर्शन में जीवन और साहित्य के सभी पक्षों का प्रतिबिम्ब समाहित रहता है। प्रेमचन्द जी जीवन में दर्शन और दर्शन में जीवन को समाहित करते हुए कहते हैं कि अपनी फिलॉसफी के बिना कोई सच्चा कलाकार नहीं हो सकता। इसलिए अपनी आंखों से जीवन देखो, अपने अनुभव से उसे जांचों। देखा जाए तो प्रेमचंद

की अगर फिलॉसफी की बात करें तो गोदान जैसे शीर्षक में भी उनकी यही फिलासफी और दार्शनिकता प्रस्फुटित होती दिखाई देती है। इसीलिए यह रचना दर्शन का एक उचित दस्तावेज प्रतीत होता है।

उपन्यासकार जीवन–दर्शन को निम्न आधारों के माध्यम से प्रस्तुत किया है–

1. अनास्था बोध–

यह सभी जानते ही होंगे कि कोई भी दार्शनिक प्रत्येक बात अथवा घटना को तथ्यों के आधार पर प्रामाणिक अथवा अप्रामाणिक मानता है। जिस वस्तु को उसने प्रत्यक्ष नहीं देखा उसके बारे में वह विश्वास नहीं करता। प्रेमचन्द जी ने कभी यह नहीं स्वीकारा कि ईश्वर ही इस जगत का नियामक है। सब का भाग्य बनाने वाला यही है और संसार का प्रत्येक कार्य उसी की इच्छा के अनुसार होता है आदि। इन बातों को उन्होंने नहीं स्वीकारा। ईश्वर के प्रति वे अनासक्ति भाव रखते थे। यहीं अनास्था बोध उन्हें दार्शनिकता के घेरे में ला देता है। प्रेमचन्द जी ने मिस्टर मेहता के माध्यम से इस अनास्था बोध की पुष्टि की है–

षकिसी सर्वज्ञ ईश्वर में इनका विश्वास न था। यद्यपि वह अपनी नास्तिकता को प्रकट न करते थे इसलिए कि इस विषय में निश्चित रूप से कोई मत स्थिर करना वह अपने लिए असम्भव मानते थे पर यह धारणा उनके मन में दृढ हो गई थी कि प्राणियों के जन्म–मरण, सुख–दुःख, पाप–पुण्य में कोई ईश्वरीय विधान नहीं है। यद्यपि होरी की बातों में ईश्वर के प्रति आस्था झलकती है। यह बात नहीं बेटा, छोटे बड़े भगवान के घर से बनकर आते हैं। सम्पत्ति बहुत ही तपस्या से मिलती है। उन्होंने पूर्व जन्म में जैसे कर्म किए उनका आनंद भोग रहे है हमने कुछ नहीं सॉंचा तो भोगे क्या? किन्तु गोबर का प्रत्युत्तर प्रेमचन्द की अनास्था भावना को प्रमाणित कर देता है। गोबर अपने पिता होरी से यह कहता है–श्जो कुछ वह (होरी) कह रहे हैं अपने मन को समझाना मात्र है अन्यथा संसार में सभी बराबर है। इतना अवश्य है कि आज के युग में जिसके हाथ में लाठी है वह गरीबों को कुचलता है और बड़ा बन जाता है। इसी प्रकार से गोबर के मुँह से ब्राह्मण के बारे में जो कुछ भी कहलवाया है वह भी प्रेमचन्द अनास्था भावना का ही द्योतक है–नीति छोडने को कौन कह रहा है? और कौन कह रहा है कि ब्राह्मण के पैसा दबा लो ?मैं तो यही कहता हूँ कि इतना सूद नहीं देंगे। बैंक वाले बारह आने सूद लेते है। तुम एक रुपया ले लो। वस्तुतः इन बातों का उल्लेख

करके प्रेमचन्द जी ने अप्रत्यक्ष रूप से ईश्वर में अनास्था जताई है। प्रो. मेहता का प्रत्येक कथन और प्रत्येक तर्क प्रेमचन्द के अनास्था बोध की ही पुष्टि करता है– ष्इसी तरह टिड्डियों भी ईश्वर को उत्तरदायी भी ठहराती होगी। जो अपने मार्ग में समुद्र आ जाने पर अरबों की संख्या में नष्ट हो जाती है। मगर ईश्वर के ये विधान इतने अज्ञेय है कि मनुष्य की समझ में नहीं आते तो उन्हें मानने से ही मनुष्य को क्या सन्तोष मिल सकता है।ष

इस प्रकार प्रेमचंद दर्शन की बात तो करते हैं लेकिन अपनी बात कहने के लिए समाज में फैली हुई ईश्वर संबंधी मान्यताओं और रूढ़ियों को भी प्रस्तुत करते हैं। और साथ ही उसका समाधान भी दिखाते हैं उपन्यास में होरी से जो कर्ज के बदले में सूद ले रहे हैं। प्रेमचंद इसको अन्याय मानते हैं। उन्होंने ईश्वर के नाम पर होने वाले अन्याय अत्याचार में अनाचार के विरुद्ध निरंतर आवाज उठाई है। उनका यह स्वर उनके अनेक उपन्यास और कहानियों में भी बराबर प्रकट होता हुआ है

2. बौद्धिकता– यह सत्य है कि साधारण मनुष्य अपने जीवन को जीवन जीने के लिए छोटे से छोटे काम के लिए भी भगवान के भरोसे रहते हैं। भगवान के भरोसे काम करने वाले को प्रेमचन्द कभी सच्चा मनुष्य नहीं मानते थे। उनकी धारणा थी कि प्रत्येक विपत्ति आने पर मनुष्य को भाग्य से नहीं बुद्धि से काम लेना चाहिए। बुद्धि के बल पर आदमी कई मुसीबतों से बच जाता है। प्रोफेसर मेहता भी बुद्धि को ही सर्वोपरि मानते हैं। प्रो. मेहता के माध्यम से प्रेमचन्द ने अपनी बौद्धिकता का परिचय दिया है। प्रो. मेहता बुद्धि के आधार पर ही हर कार्य करते हैं। सम्पादक ओकारनाथ से वे बुद्धि के महत्व का वर्णन इन शब्दों में करते है– श्धन को आप किसी अन्यास से बराबर फैला सकते है। लेकिन बुद्धि को, चरित्र को और रूप को, प्रतिभा को और बल को बराबर फैलाना तो आपकी शक्ति के बाहर है। छोटे–बडे का भेद केवल धन से ही तो नहीं होगा। मैंने बड़े–बड़े धन कुबेरों को भिक्षुकों के सामने घुटने टेकते देखा है और आपने भी देखा होगा। क्या यह सामाजिक विषमता नहीं है?ष

इस तरह से प्रेमचंद मनुष्य की बुद्धि को सर्वप्रथम मानते हैं और उनके बुद्धि पूर्वक किए गए कार्य को ही महत्व देते हैं। उपन्यास में भी उन्होंने बुद्धिमता का समर्थन किया है और राय साहब के जरिए भी उन्होंने बुद्धिवाद का सम्मान किया है।

3. कर्म की प्रधानता– मनुष्य के जीवन–दर्शन का मूलाधार कर्म योग है। भाग्य के भरोसे बैठे रहने वाले व्यक्ति को प्रेमचन्द मूर्ख मानते थे। जीवन के प्रति प्रेमचन्द की आस्था सुदृढ थी। जीवन के अतिरिक्त सभी शक्तियों को वे अस्वीकार करते थे। उनकी नजर में दैवी शक्तियों का कोई अस्तित्व नहीं है। स्वर्ग या नरक केवल जीवन को सुधारने के लिए बताए गए काल्पनिक मार्ग हैं। प्रत्येक व्यक्ति को निवृत्ति या प्रवृति में किसी एक मार्ग की चुन लेना चाहिए। इनमें वो किसी एक मार्ग पर चलने से व्यक्ति अपना उद्धार स्वयं कर सकता है। उनका मानना है कि ईश्वरीय तत्च की कोई जरूरत नहीं, यदि मनुष्य कर्म को ही सर्वोपरि मानता है। प्रो मेहता के माध्यम से प्रेमचन्द ने इस तथ्य की पुष्टि भी की है– ष्एकात्मकवाद या सर्वात्मवाद के अहिंसा तत्व को वे आध्यात्मिक दृष्टि से नहीं, भौतिकी दृष्टि से ही देखते थे। यद्यपि इन तत्वों का इतिहास के किसी काल में भी आधिपत्य नहीं रहा फिर भी मनुष्य जाति के सांस्कृतिक विकास में उनका स्थान बड़े महत्व का है। मानव समाज की एकता में मेहता का दृढ विश्वास था, मगर इस विश्वास के लिए उन्हें ईश्वर तत्त्व मानने की जरूरत न मालूम होती थी। प्रेमचन्द मानते थे कि मानव को निःस्वार्थ भाव से कर्म करते रहना चाहिए। सच्ची सेवा केवल अनासक्त भाव से किए गए कर्मों में रहती है। स्वर्ग प्राप्ति के लिए किए गए कर्मों में स्वार्थ वृत्ति रहती है। कर्मयोग के सदर्भ में प्रो. मेहता के माध्यम से प्रेमचन्द कहते है कि श्आत्मवाद और अनात्मवाद की खूब छानबीन कर लेने पर वह इसी तत्व पर पहुँच जाते थे कि प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों के बीच जो सेवा मार्ग है चाहे उसे कर्मयोग कहो वही जीवन को सार्थक कर सकता है वही जीवन को ऊँचा और पवित्र बना सकता है।ष प्रेमचंद मानते हैं कि दर्शन को समझने के लिए द्वैतवाद और अद्वैतवाद दो तत्व है और जिन आध्यात्मिक रूपों को हमने देखा ही नहीं उसमें जीवन का विकास खोजना निरर्थक है। इसलिए प्रेमचंद सेवा भावना वाले कर्मों को महत्व देते हैं।

4. मानवतावाद– प्रेमचंद जीवन में मानव तथा वाद की पक्षधर है विश्व धरती पर मानवतावाद को एक उपहार मानते हैं उनका मानना है कि यदि इस पृथ्वी से मानवतावाद है जाए मानवतावाद नहीं होगी तो मनुष्य का अस्तित्व मिट जाएगा।गोदान उपन्यास में होरी राय

साहब द्वारा दशहरे के अवसर पर आयोजित होने वाले धनुषयज्ञ में माली बनाया जाता है तो उसकी चिंता है कि वह शगुन की रुपए कैसे देगा क्योंकि उसकी सारी फसल तो खेतों में ही उठ गई। कर्जदार वह फिर बना हुआ है। इस बारे वो भोला से कहता है, कौन कहता है कि ष्हम तुम आदमी हैं इसलिए हमने आदमीयत कहां है। उसकी दृष्टि में मानव वो ही है जिनके पास अपार धन है, अधिकार है, और शिक्षा है। मानवतावाद के संबंध में अपने जीवन को धन से जोड़ करके देखता है

मानवीयता तो जीवन दर्शन का मूलाधार है। प्रेमचन्द स्वयं मानवतावाद के सच्चे समर्थक थे। मानवीयता के बिना इस धरती से वैषम्यता का जहर खत्म नहीं किया जा सकता। व्यवस्था में उत्पन्न दोषों को भी मानवतावाद के माध्यम से दूर किया जा सकता है। राय साहब होरी से अपनी मानवीयता का उल्लेख इन शब्दों में करते है– श्तुम हमें बड़ा आदमी समझते हो। हमारे नाम बड़े है। पर दर्शन छोटे। हमारा धर्म है कि यदि कोई हमारे मुँह की रोटी छीन ले तो हम उसके गले में उँगली डालकर रोटी निकाल लेते हैं। अगर हम छोड़ दें तो देवता है। बड़े आदमियों की ईर्ष्या और वैर केवल आनन्द के लिए है। हम इतने बड़े आदमी हो गए हैं कि हमें नीचता और कुटिलता में ही निःस्वार्थ और परमानंद मिलता है। हम देवतापन के उस दर्जे पर पहुँच गए है जहां हमें दूसरों के रोने पर हंसी आती है। राय साहब जैसे लोगों की तथाकथित मानवीयता का उद्‌घाटन करके प्रेमचन्द ने वास्तव में मानवीयता स्थापित करने की वकालत की है। राय साहब के पास ऐशो–आराम की हर वस्तु उपलब्ध है लेकिन इसके बावजूद वे अपने अन्दर आदमियत की कमी महसूस करते हैं। प्रेमचन्द ने उन्हीं के मुख से कहलवा भी दिया है– दुनियां समझती है कि हम बड़े सुखी है। हमारे पास इलाके, महल, सवारियों, नौकर–चाकर, कर्ज, वेश्याएँ, क्या नहीं है? लेकिन जिनकी आत्मा में बल नहीं, अभिमान नहीं, वह और चाहे कुछ भी हो आदमी नहीं है। इसी तरह राय साहब के मुख से जागीरदारी छीन लेने की इच्छा का खुलासा करवाकर प्रेमचन्द ने मानवीयता का आदर्श प्रस्तुत किया है। राहसाहब कहते हैं– श्लक्षण कह रहे है कि बहुत जल्द वह दिन आए। वह हमारे उद्धार का दिन होगा। हम परिस्थितियों के शिकार बने हुए हैं। यह परिस्थिति ही हमारा सर्वनाश कर रही है और जब तक सम्पत्ति की यह बेड़ी हमारे पैरों से न निकलेगी, तब तक यह अभिशाप हमारे सिर पर मंडराता रहेगा, हम मानवता का वह पद न पा सकेंगे। जिस पर पहुँचना ही जीवन का अंतिम लक्ष्य है। राय साहब का यह कथन उनके आत्मचिन्तन

को उद्द्घाटित करता है। वे भी कहीं–न–कहीं मानवता को स्वच्छ जीवन का मूलाधार मानते है क्योंकि मानवता के बिना जीवन और जगत् का कल्याण करना असम्भव है।

5. आदर्शवाद– प्रेमचंद जीवन में आदर्श को बहुत महत्व देते हैं और उनका सारा साहित्य भी आदर्शवादी विचारधारा को लेकर के लिखा गया है। प्रेमचंद एक आदर्शवादी लेखक हैं उनके अनुसार स्वाभाविक रूप से जीवन जीना ही आदर्शवादिता की पहचान है। व्यक्ति को ज्ञान, धर्म, रुढ़ि स्वर्ग और मोक्ष के चक्करों से दूर रहना चाहिए। जीवन को प्राकृतिक ढंग से व्यतीत करना ही आदर्श की पहली सीढ़ी है। यदि मनुष्य अपने जीवन में प्राकृतिक आचरणों को अपनाए तो वह न केवल अपने लिए बल्कि समाज के लिए भी आदर्श स्थापित कर सकता है। प्रेमचन्द ने जीवन की इसी आदर्शवादी अवधारणा को प्रो. मेहता के मुख से कहलवाया है–ष्मेरे जीवन का आदर्श क्या है? मैं प्रकृति का पुजारी हूँ और मनुष्य को उसके प्राकृतिक रूप में देखना चाहता हूँ। जो प्रसन्न होकर हँसता है दुःखी होकर रोता है और क्रोध में आकर मार डालता है। जो दुःख और सुख दोनों का दमन करते हैं जो रोने को कमजोरी और हसने को हलकापन समझते हैं. उनसे मेरा कोई मेल नहीं। जीवन मेरे लिए आनदमय क्रीड़ा है सरल स्वच्छन्द जहाँ कुत्सा, ईर्ष्या और जलन के लिए कोई स्थान नहीं। मैं भूत की चिन्ता नहीं करता भविष्य की परवाह नहीं करता। मेरे लिए वर्तमान ही सब कुछ है। भूत, भविष्य की चिन्ता में मानवीय कर्म होने असम्भव है। आनन्द में ही मोक्ष और सुख निवास करते हैं और यही आनन्द मानवीयता का निर्माण भी करता है।

प्रेमचंद इस उपन्यास में भी आदर्शवाद को प्राकृतिक जीवन से जोड़कर के देखते हैं वह मानते हैं की प्रकृति जीवन जीवन की सच्ची कसौटी है जीने के लिए और मानव को मानव का सच्चा स्नेह इसी से ही प्राप्त हो सकता है। प्रेमचंद जीवन के आदर्श को समझाते हुए यह भी कहते हैं कि व्यक्ति को अपना जीवन सरल और निष्कपट प्रवृत्ति से ही जीना चाहिए। वह दिखावटीपन और बनावटीपन पर विश्वास नहीं करते। वह किसी पूजा पाठ विश्वास नहीं करते और धर्म को भी सामाजिक और व्यक्तिगत रूप से जोड़कर के देखते हैं उनकी दृष्टि में परंपरागत रूढ़ियों और अंधविश्वास पर आश्रित जीवन निरर्थक है। मानव जीवन में वह सच्ची सेवा ममता और सत्य को ही धर्म मानते हैं जो मनुष्य के स्वाभाविक आचरण में दिखाई

देते हैं और यही सब जीवन में आदर्श की प्रतिस्थापन भी करते हैं। साथ ही प्रेमचंद इस उपन्यास में भी अनेक रूढ़ियों अंधविश्वास, मोक्ष, उपासना, मानवीयता, ईश्वर, आनंद, प्रेम, सुख शांति और जैसे बहुत से विचारों को तथा इनसे जुड़ी बहुत सी विचारधाराओं को आलोच्य कृति में समाहित करते प्रतीत होते हैं। आदर्शवाद को व्यख्यायित करते हुए प्रेमचन्द कहते हैं कि सच्ची मानवीयता तो सेवा, ममता और त्याग में बसती है। आदमी में आदमियत तभी है जब वह हँसने और रोने में सक्षम है। यदि वह हंस और रो नहीं सकता तो वह मानव हो ही नहीं सकता। इस को ऐसे स्पष्ट करते दिखते हैं– ष्ज्ञानी कहता है कि ओठों पर मुस्कुराहट न आए, आँखों में आँसू न आएं। मैं कहता हूँ, अगर तुम हँस नहीं सकते और से नहीं सकते तो तुम मनुष्य नहीं हो, पत्थर हो। वह ज्ञान जो मानवता को पीस डाले, ज्ञान नहीं कोल्हू है। वस्तुत प्रेमवत्त्व सुख–दुःखात्मक अनुभूतियों के माध्यम से ही मानवीय आदर्श प्रतिष्ठित करना चाहते थे।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि गोदान में प्रेमचंद का जीवन दर्शन नई विचारधारा को लेकर प्रस्तुत हुआ है। वे किसी भी प्रकार से स्वर्ग नरक पाप पुण्य में विश्वास नहीं करते, बल्कि बुद्धिवाद के समर्थक है। उनकी बात आत्मा का विस्तार दिखाई देती है यही उनका जीवन दर्शन है। जीवन के प्रति जो विचारधारा वे प्रस्तुत करते हैं, वह आज के संदर्भ में भी उपयोगी और मान्य लगती है। कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द का जीवन–दर्शन अत्यन्त व्यापक है। उन्होंने अनास्था बोध, बौद्धिकता, कर्म की प्रधानता, मानवतावाद और आदर्शवाद के माध्यम से जीवन–दर्शन को व्याख्यायित किया है। उनका जीवन–दर्शन सर्वथा नई विचारधारा से सम्पृक्त है। प्रेमचन्द ने ईश्वर की बजाए ज्ञान और धर्म की बजाए कर्म की प्रधानता स्वीकार की। जीवन के प्रति प्रेमचन्द की अवधारणा आज भी प्रासंगिक है। इस प्रकार अंत में यह कहना ही उचित होगा कि गोदान उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार ने अपने जीवन–दर्शन को व्यापक स्तर पर प्रस्तुत किया है।

1.3.4– गोदान : कृषक जीवन का महाकाव्य

उपन्यास और महाकाव्य दोनों ही वृहद आकार की रचनाएं हैं। दोनों में जीवन के विविध पक्षों का चित्रण होता है। प्रेमचंद उपन्यास को यदि मानव जीवन का चित्र मानते हैं तो महाकाव्य भी किसी विशिष्ट मानव का जीवन चित्रित करता है। इस आधार पर महाकाव्य और उपन्यास

का लक्ष्य प्रायः एक जैसा ही होता है। प्रेमचंद की महानतम रचना श्गोदानश कृषक संस्कृति का दस्तावेज है। इस उपन्यास में प्रेमचंद ने किसान के जीवन के दुःख दर्द को वाणी दी है। साथ ही गांव की अन्य समस्याएं जैसे छुआछूत, ब्राह्मणों का पाखंड, दरोगा का आतंक, पूंजीपति, साहूकारों एवं जमींदारों का शोषण आदि का विस्तृत एवं व्यापक वर्णन किया है। गोदान प्रेमचंद की अमर रचना है। जिसमें ग्रामीण भारत की आत्मा साकार हो उठती है। कुछ विद्वान इसे ग्रामीण जीवन और कृषि संस्कृति का शोक–गीत स्वीकारते हैं तो कुछ विद्वान इसे ग्रामीण संस्कृति की श्गीताश कहते हैं। गोदान निश्चय ही ग्राम जीवन और ग्राम संस्कृति को उसकी सम्पूर्णता में प्रस्तुत करने वाला अद्वितीय उपन्यास है।

1. कृषि संस्कृति का वर्णन–

प्रेमचंद ने इस उपन्यास में कृषकों की मान्यताएँ, रीतिरिवाज, परंपराएं, संस्कार, नैतिक मूल्य, उनका रहन–सहन, आचार विचार का अत्यंत मार्मिक ढंग से वर्णन किया है। गांव के एक किसान को सबसे अधिक लगाव अपनी भूमि से होता है। और हिन्दू होने के कारण एक गाय उसके लिए पूजनीय होती है। हर किसान की यही इच्छा रहती है कि उसके पास कृषि योग्य भूमि हो और उसके द्वार पर जुगाली करती एक गाय हो। परंतु गांवों में, बढ़ते जमीदारों, साहूकारों और सरकार के शोषण और अत्याचार के कारण उसकी इच्छा पूरी नहीं हो पाती। प्रेमचंद ने होरी के माध्यम से कृषक जीवन की इस करुण कहानी का अत्यंत प्रभावोत्पादक चित्रण किया है। होरी करता भी है – गऊ तो द्वार की शोभा है। सबेरे–सवेरे गऊ के दर्शन हो जाएँ तो क्या कहना, स्वयं प्रेमचंदे लिखते हैं कि ष्हर एक गृहस्थ की भांति होरी के मन में भी गऊ की लालसा चिरकाल से संचित चली आती थी। होरी की गौ लालसा इतनी प्रबल है कि वह छल कपट का सहारा लेकर भी, कर्ज के रूप में भोला से गाय ले लेता है। किंतु उसी का भाई शत्रुतावश गाय को जहर देकर मार डालता है। फिर भी लाख चेष्टाओं के बावजूद भी होरी गाय नहीं ला पाता और इसी इच्छा को लिए ही मर जाता है।

प्रेमचंद ने कृषक जीवन के चित्रण में निम्नांकित पक्षों को उभरा है।

1. ग्रामीण परिवेश का चित्रण – प्रेमचंद ने ग्राम्य जीवन के अनेकों चित्र गोदान में प्रस्तुत किए है। ग्रामीण किसानों के घर द्वार, खेत खलियान और प्राकृतिक दृश्यों का जो वास्तविक

मिवण प्रेमचंद ने किया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। ग्रामीण जीवन की अनेक धारणाओं का चित्रण प्रेमचंद ने किया है यथा– गांव में संयुक्त परिवार हुआ करते हैं। अलग रहना यानि अलगोझा परिवार का दुर्भाग्य माना जाता है।

माना जाता था कि इससे परिवार की प्रतिष्ठा कम होती है अरे होरी को अपने भाईयों द्वारा अलगोझा कराने का बड़ा संताप उठाना पड़ता है। गांवों में सभी लोग ब्राह्मण और धर्म का पालन करते हैं और वहीं गांव भर में अंध– विश्वास भी प्रचलित हैं। भोला धर्म के नाम पर होरी के दोनों बैल खोल ले जाता है। होरी भी अंधविश्वासी बना कहता है– अगर ठाकुर या बनिए रूपये के होते, तो उसे ज्यादा चिंता न होती, लेकिन ब्राह्मण के रुपये उसकी एफ पाईवी दब गई, तो हड्डी तोडकर निकलेगी। यही नहीं ग्रामीण जीवन में शबिरादरीश का महत्व है। किसान किसी भी मूल्य पर बिरादरी से अलग नहीं होना चाहता। यद्यपि होरी का परिवार इसकी चिंता नहीं करता, किंतु गोबर की गर्भवती प्रेमिका झनिया को शरण देने के लिए बिरादरी उसका बहिष्कार करने का भय दिखाती है। और बिरादरी उस पर जो दंड लगाती है, होरी तो उसे सिर झुकाकर स्वीकार कर लेता है।

2. पात्रों के नामकरण– गोदान में प्रेमचंद ने जिन भी पात्रों की सृष्टि की है उनके नाम पूर्णतया कृषक जीवन के अनुरूप है यथा – होरी, गोबर, झुनिया, धनिया, झींगुर, कलिया, रूपा, हीरा आदि। यही नहीं पात्रों की वेशभूषा, भी ग्रामीण रंग में रंगी हुई है। होरी की ससुराल जाने की पोशाक जिसमें लाठी, मिरजई, जूते, पगडी और तमाखू का बटुआ ग्राम्य संस्कृति और सभ्यता को दर्शाता है।

3. कृषक समाज का यथार्थ का चित्रण– प्रेमचंद ने कृषक समाज और उसमें व्यक्ति की स्थिति का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। श्होरी अपने लड़के गोबर की गर्भवती प्रेमिका झुनिया को अपने यहां शरण देता है, उसका केवल इतना ही अपराध होता है। इसके लिए गाँव के सरपंच पंच तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति होरी को बिरादरी से बाहर करके उस पर तीस मन अनाज और सौ रुपए की डाँड लगा देते हैं। इस ऋण को चुकाते–चुकाते उसके बच्चे रोटी के एक–एक टुकडे को भी मोहताज हो जाते हैं। यहाँ तक कि उसकी पत्नी धनिया भी विद्रोह के आगे घुटने टेक देती है।

4. गांवों में राजनैतिक वातारण का चित्रण– प्रेमचंद तत्कालीन समय की राजनैतिक परिस्थितियों का वर्णन गोदान में करते हैं। गाँवों में किसान सबके शोषण का शिकार होता है। पूंजीपति, जमीदार , पटवारी, पंच सरपंच सभी किसान का शोषण करते हैं। थाना, पुलिस कचहरी, अदालत सब है सब बड़े लोगों के इशारों पर काम करते हैं और भष्ट्राचार को बढ़ावा देते हैं। कृषक जीवन भी राजनैतिक पक्ष से अछूता नहीं है।

5. पात्रों की भाषा एवं कार्य कलाप का चित्रण–

उपन्यास के पात्रों की भाषा ग्रामीण परिवेश के एकदम अनुकूल है। सरल एवं छोटे–छोटे वाक्यों का प्रयोग किया गया है। दलारी सहुआइन के कथन में भाषा का ये रूप देखा जा सकता है। यथा बाकी बड़ी गाल– दराज औरत है भाई। मर्द के मुँह लगती है। होरी जैसा मरद है कि इसका निर्वाह होता है। इस प्रकार गोदान में प्रेमचंद ने ग्राम्य परिवेश, उससे हे संबंधित संस्कृति सभ्यता तथा पूरे जीवन का चित्रांकन सजीवता एवं यथार्य रूप में किया है। इस प्रकार यह कहना अनुचित नहीं होगा कि गोदान कृषक जीवन का महाकाव्य है। कृषक जीवन के प्रत्येक पक्ष का चित्रण अति सूक्ष्मता के साथ प्रेमचंद ने गोदान में बेहद ईमानदारी से किया है।

1.5 प्रगति समीक्षा –

अभी तक इस अध्याय में विद्यार्थी जिन विषयों का अवलोकन कर पाए है उसकी प्रगति समीक्षा का समय है। विद्याार्थी इन प्रश्नों का अध्ययन करने के पश्चात स्वयं उत्तर लिखने का प्रयास करें। साहित्य का क्षेत्र क्या है। आज के समय में गद्य विधाएं क्या प्रभाव रखती है। इसकी समीक्षा अपने शब्दों में तैयार करें।

प्रश्न : गोदान की समस्याओं का वर्णन करें।

प्रश्न : गोदान की नारी भावना बताएं।

प्रश्न : प्रेमचंद के जीवन दर्शन का वर्णन करें।

1.6 सारांष –

1.7 संकेत शब्द – प्रेमचंद, आधुनिक गद्य साहित्य, गोदान ।

1.8 स्वः मूल्यांकन हेतु प्रष्न –

1.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रष्नोतर –

प्रश्न : गोदान की समस्याओं का वर्णन करें।

उतर : ***<u>अ– ग्रामीण जीवन की समस्याएंः</u>*** गोदान की कथावस्तु की पृष्ठभूमि में एक छोटा सा गांव है बेलारी और इसी बेलारी गांव की ही कहानी को उपन्यासकार प्रेमचंद ने प्रदर्शित किया है। ग्रामीण जीवन की एक कथा जो मूलतः होरी और उसकी पत्नी धनिया के जीवन को केंद्र में रखकर प्रस्तुत की गई है। होरी और धनिया जैसे अति साधारण ग्रामीण पात्रों के ईद–गिर्द घूमती यह सारी कथा इस उपन्यास को अमर रचना बना रही है। गांव में एक तरफ जमीदार रायसाहब अमरपाल सिंह हैं,तो दूसरी ओर इसी बेलारी गांव में विभिन्न जातियों के लोग रहते हैं। अधिकांश कृषक हैं, बढ़ई, कुम्हार,साहूकार ब्राह्मण,अहीर,लुहार जाति के लोग बसते हैं। रहन–सहन और उनके पैतृक व्यवसाय,आचार–विचार रीति–रिवाज का उपन्यासकार ने वर्णन करते हुए वहां की समस्याओं को व्यापकता से चित्रित किया है। जिनका समस्याओं का वर्णन इस प्रकार है।

1. शोषण की समस्या– गोदान में होरी जैसे पात्र के माध्यम से शोषण की समस्या को दर्शाया है। किसान एवं ग्रामीण लोगों में शिक्षा और जागरूकता की कमी के कारण अपने अधिकारों का प्रयोग नहीं कर पाते और जागृति के अभाव में पीढ़ी दर पीढ़ी जमीदारों, पूंजीपतियों के शोषण का शिकार होते रहते हैं। यहां सामंतवादी और पूंजीपति व्यवस्था गोदान में परिलक्षित होती है। यद्यपि होरी का प्रत्यक्ष रूप से कोई शोषण नहीं करता, लेकिन इस व्यवस्था के चलते हुए नित्य प्रति वह लुटता रहता है और गांव के तथाकथित नुमाइंदे धर्म की आड़ में

उसका शोषण करते हैं। इस उपन्यास में उपन्यासकार ने यह दर्शाया है कि किसान सदैव ऋणग्रस्त रहते हैं अतः ये किसान हमेशा जमीदारों द्वारा शोषित होते रहते हैं। जीवन में कोई सुविधाएं ना होने एवं धनाभाव के चलते स्वयं का शोषण करवाना इनकी मजबूरी बन जाती है, जबकि शोषण करना जमीदारों का अधिकार होने लगता है। दिन ब दिन बेबस व्यक्ति शोषित होने के लिए बाध्य होता है। इन सब समस्याओं का अंकन बखूबी प्रेमचंद ने किया है। यही कारण है की होरी जैसा पात्र शोषण की चक्की में इस उपन्यास के अंत तक पिसता ही रहता है। होरी के अतिरिक्त इस उपन्यास में हीरा, धनिया पुलिया, सिलिया सभी का किसी ने किसी प्रकार से शोषण होता है। शोषण की इस भयावह परिणीति को दर्शाते हुए प्रेमचंद बताते हैं कि अन्न उत्पन्न करने वाला किसान सदैव भूखा ही रहता है। और किसान इतनी बेचारगी से जीवन जीता है कि रात–दिन, गर्मी–सर्दी में धूप बरसात सभी के थपेड़े सहनकर खून–पसीना एक करके खेतों में अन्न पैदा करता है।

इसी समस्या को इस उपन्यास में रामसेवक अपने शब्दों में इस प्रकार कहता है– थाना पुलिस कचहरी अदालत सब है हमारी रक्षा के लिए। लेकिन रक्षा कोई नहीं करता। चारों तरफ से लूट है। जो गरीब है बेबस है उसकी गर्दन काटने के लिए सभी तैयार रहते हैं यहां तो जो किसान है सभी का नरम चारा है। पटवारी को नजराना और दस्तूरी ने दे तो गांव में रहना मुश्किल। जमीदार के चपरासी और करिंदों का पेट ना भरे तो निर्वाह न हो। थानेदार और कांस्टेबल तो जैसे उसके दामाद हैं। जब उनका दौरा गांव में हो जाए तो किसान का धर्म है कि वह उनका आदर सत्कार करे। नजर नयाज दे। नहीं तो एक रिपोर्ट में गांव का गांव बंध जाए।

यह सही है कि यह शोषण की समस्या प्रेमचंद के युग से भी बहुत पुरानी थी, लेकिन यह शोषण का चक्र इतना अधिक था कि इस ग्राम की दशा बहुत ही दुःखद थी। किसानों के जीवन का सत्य केवल पिसना, घुटना और सहना था। इसी को ही किसान अपनी तकदीर मान चुके थे। शोषण ने किसी भी किसान का पीछा में नहीं छोड़ा था। इस समस्या को प्रेमचंद पूरी सच्चाई के साथ पाठकों के समक्ष लाते हैं। यही उपन्यास की पहली और मूल समस्या है।

2. कर्ज की समस्या– गोदान उपन्यास में दूसरी बड़ी समस्या का चित्रण करते हुए प्रेमचंद ने कर्ज की समस्या को उभारा है। कर्ज एक ऐसी समस्या है, जिसमें पूरा का पूरा गांव घुन की तरह पिस रहा है। गोदान की मूल समस्या ऋण संबंधी समस्या है। कर्ज के चंगुल से भोला भाला किसान आजीवन निकल नहीं पाता और जमींदार इन भोले वाले किसानों का सदैव शोषण करते ही रहते हैं। जिसे चित्रित करने में उपन्यासकार ने अद्‌भुत सफलता हासिल की है। होरी जैसे भोले भाले कृषक का जमीदार शोषण करते है। लगान, नजराना, बेगार और शगुन के नाम पर न जाने किस–किस तरह से जमीदारों द्वारा किसानों को लूटा जाता है। और वह बेचारे विवश होकर बेगार भरते ही रहते हैं। जमीदारों के ऋण से मुक्ति पाने के लिए वे गांव के छोटे–छोटे साहूकारों से ऋण लेते हैं। इसीलिए ही उन्हें पुराने ऋण को चुकाने के लिए हर बार नया ऋण लेना पड़ता है। यही कारण है कि गोदान का मुख्य ग्रामीण पात्र इसी कर्जे से मुक्ति पाने के लिए, ऋण की समस्या से निजात पाने के लिए अपनी बेटी रूपा को एक अधेड़ व्यक्ति से ब्याह देता है और बदले में 200 रुपए प्राप्त करता है। इस घटना का वर्णन करते हुए उपन्यासकार इस प्रकार दर्शाया है– ष्होरी ने रुपए लिए तो उसका हाथ कांप रहा था। उसका सिर ऊपर न उठ सका। मुंह से एक शब्द न निकला। जैसे अपमान के गड्ढे में गिर पड़ा हो और गिरता चला जाता हो। आज तीस साल तक जीवन से लड़ते रहने के बाद वह परास्त हुआ है और ऐसा परास्त हुआ कि मानो उसको नगर के द्वार पर खड़ा कर दिया है, जो आता है उसके मुंह पर थूक देता है।

प्रश्न : गोदान की नारी भावना का वर्णन करें।

उतरः उपन्यास के नारी पात्र– गोदान एक सामाजिक उपन्यास है, जिसमें नारी पात्रों की यथार्थ समायोजना दिखाई देती है। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए सर्वप्रथम ग्रामीण नारी पात्रों की चर्चा यहां की जा रही है।

ग्रामीण पात्रों में धनिया झुनिया सोना रूपा आदि कई नारी पात्र हैं, जिसमें धनिया भारतीय आदर्श परंपरा से पोषित पात्र है। झुनिया अंतरजातीय विवाह करती है। सिलिया मातादीन की प्रेमिका है। होरी की दोनों पुत्रियां सोना और रूपा विवाहित हैं। सबका जीवन विविधता लिए हुए हैं। इन ग्रामीण पात्रों को ग्रामीण परिवेश के अनुसार यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत

किया गया है। वहीं शहरी परिवेश में रहने वाली स्त्रियां मिस मालती मिसेज खन्ना, मीनाक्षी और सरोज जैसी महिलाएं स्वतंत्र है और पूरी तरह आत्मनिर्भर हैं। वह शहरी परिवेश में ही जीवन की रही है और अपने ही अनुसार वैवाहिक बंधनों में बांधना चाहती हैं। स्वतंत्र विचारों की स्त्रियां अपने अधिकारों के प्रति भी उतनी ही जागरुक है। इसका वर्णन प्रेमचंद ने अपने उपन्यास में नारी पात्रों के वर्णन करते हुए सूक्ष्मता से दर्शाया है।

2. आदर्शमयी नारी– प्रेमचंद की पहचान एक सुधारवादी और आदर्शवादी लेखक के रूप में जान जाती है। उनके लिखे अनेक उपन्यासों में उनका समाजसुधारक रूप सामने आता है क्योंकि प्रेमचंद जी जिस समय लिख रहे हैं उस समय नारी की जो दुर्दशा थी उसको चित्रित करते हुए प्रेमचंद उनसे जुड़ी अनेक समस्याओं को भी प्रदर्शित करते हैं। अनमेल विवाह, विधवा विवाह, विजातीय विवाह अवैध संबंध आदि अनेक आधारों पर नारी के दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं। आदर्शवादी लेखक होने के नाते वे नारी के आदर्श रूप को विशेष प्रोत्साहित करते हैं। यही कारण है कि गोदान में खुर्शीद नामक पात्र नारी के आदर्श को पुरुष से अधिक ऊंचा मानते हैं तथा नारी को अत्यंत धैर्यवान समझते हैं। वही प्रोफेसर मेहता भी नारी के प्रति बहुत आदर्शात्मक विचार रखते हैं, जिसे प्रस्तुत करते हुए प्रेमचंद प्रोफेसर मेहता से कहलवाते हैं– ष्संसार में जो कुछ सुंदर है, उसकी प्रतिभा को मैं स्त्री कहता हूं। मैं उससे यह आशा रखता हूं कि मैं उसे मार ही डालूं तो भी प्रतिहिंसा का भाव उसमें ना आए। अगर मैं उसकी आंखों के सामने किसी स्त्री को प्यार करूं तो भी उसकी ईर्ष्या ना जागे। ऐसी नारी पाकर मैं उसके चरणों में गिर पडूंगा और उस पर अपने को अर्पण कर दूंगा।ष

प्रोफेसर मेहता खुद भी ऐसी पत्नी की आशा रखते हैं, जो आदर्श की प्रतिमूर्ति हो। क्योंकि लेखक की सोच ही प्रोफेसर मेहता की सोच से आकर के मिलती है। वे मानते हैं कि आदर्श नारी ही मनुष्य को सफलता की ओर अग्रसर करती है। यही कारण है कि प्रेमचंद नारी जागरण के समर्थक प्रतीत होते हैं और स्वयं नारी को पुरुष का आदर्श मानते हैं।

प्रश्न : प्रेमचंद का जीवन दर्शन का वर्णन करें।

उतरः विद्यार्थी इस बात को समझें कि जीवन–दर्शन उस शक्ति का नाम है जो विविध प्रकार के साहित्य को अमरता प्रदान करती है। जीवन–दर्शन में जीवन और साहित्य के सभी पक्षों

का प्रतिबिम्ब समाहित रहता है। प्रेमचन्द जी जीवन में दर्शन और दर्शन में जीवन को समाहित करते हुए कहते हैं कि अपनी फिलॉसफी के बिना कोई सच्चा कलाकार नहीं हो सकता। इसलिए अपनी आंखों से जीवन देखो, अपने अनुभव से उसे जांचों। देखा जाए तो प्रेमचंद की अगर फिलॉसफी की बात करें तो गोदान जैसे शीर्षक में भी उनकी यही फिलासफी और दार्शनिकता प्रस्फुटित होती दिखाई देती है। इसीलिए यह रचना दर्शन का एक उचित दस्तावेज प्रतीत होता है।

उपन्यासकार जीवन–दर्शन को निम्न आधारों के माध्यम से प्रस्तुत किया है–

1. अनास्था बोध–

यह सभी जानते ही होंगे कि कोई भी दार्शनिक प्रत्येक बात अथवा घटना को तथ्यों के आधार पर प्रामाणिक अथवा अप्रामाणिक मानता है। जिस वस्तु को उसने प्रत्यक्ष नहीं देखा उसके बारे में वह विश्वास नहीं करता। प्रेमचन्द जी ने कभी यह नहीं स्वीकारा कि ईश्वर ही इस जगत का नियामक है। सब का भाग्य बनाने वाला यही है और संसार का प्रत्येक कार्य उसी की इच्छा के अनुसार होता है आदि। इन बातों को उन्होंने नहीं स्वीकारा। ईश्वर के प्रति वे अनासक्ति भाव रखते थे। यहीं अनास्था बोध उन्हें दार्शनिकता के घेरे में ला देता है। प्रेमचन्द जी ने मिस्टर मेहता के माध्यम से इस अनास्था बोध की पुष्टि की है–

षकिसी सर्वज्ञ ईश्वर में इनका विश्वास न था। यद्यपि वह अपनी नास्तिकता को प्रकट न करते थे इसलिए कि इस विषय में निश्चित रूप से कोई मत स्थिर करना वह अपने लिए असम्भव मानते थे पर यह धारणा उनके मन में दृढ हो गई थी कि प्राणियों के जन्म–मरण, सुख–दुःख, पाप–पुण्य में कोई ईश्वरीय विधान नहीं है। यद्यपि होरी की बातों में ईश्वर के प्रति आस्था झलकती है। यह बात नहीं बेटा, छोटे बड़े भगवान के घर से बनकर आते हैं। सम्पत्ति बहुत ही तपस्या से मिलती है। उन्होंने पूर्व जन्म में जैसे कर्म किए उनका आनंद भोग रहे है हमने कुछ नहीं सँाचा तो भोगे क्या? किन्तु गोबर का प्रत्युत्तर प्रेमचन्द की अनास्था भावना को प्रमाणित कर देता है। गोबर अपने पिता होरी से यह कहता है–श्जो कुछ वह (होरी) कह रहे हैं अपने मन को समझाना मात्र है अन्यथा संसार में सभी बराबर है। इतना अवश्य है कि आज के युग में जिसके हाथ में लाठी है वह गरीबों को कुचलता है और बड़ा बन जाता है। इसी प्रकार से गोबर के मुँह से ब्राह्मण के बारे में जो कुछ भी कहलवाया है

वह भी प्रेमचन्द अनास्था भावना का ही द्योतक है—नीति छोडने को कौन कह रहा है? और कौन कह रहा है कि ब्राह्मण के पैसा दबा लो ?मैं तो यही कहता हूँ कि इतना सूद नहीं देंगे। बैंक वाले बारह आने सूद लेते है। तुम एक रुपया ले लो। वस्तुतः इन बातों का उल्लेख करके प्रेमचन्द जी ने अप्रत्यक्ष रूप से ईश्वर में अनास्था जताई है। प्रो. मेहता का प्रत्येक कथन और प्रत्येक तर्क प्रेमचन्द के अनास्था बोध की ही पुष्टि करता है— ष्इसी तरह टिड्डियों भी ईश्वर को उत्तरदायी भी ठहराती होगी। जो अपने मार्ग में समुद्र आ जाने पर अरबों की संख्या में नष्ट हो जाती है। मगर ईश्वर के ये विधान इतने अज्ञेय है कि मनुष्य की समझ में नहीं आते तो उन्हें मानने से ही मनुष्य को क्या सन्तोष मिल सकता है।ष

इस प्रकार प्रेमचंद दर्शन की बात तो करते हैं लेकिन अपनी बात कहने के लिए समाज में फैली हुई ईश्वर संबंधी मान्यताओं और रूढ़ियों को भी प्रस्तुत करते हैं। और साथ ही उसका समाधान भी दिखाते हैं उपन्यास में होरी से जो कर्ज के बदले में सूद ले रहे हैं। प्रेमचंद इसको अन्याय मानते हैं। उन्होंने ईश्वर के नाम पर होने वाले अन्याय अत्याचार में अनाचार के विरुद्ध निरंतर आवाज उठाई है। उनका यह स्वर उनके अनेक उपन्यास और कहानियों में भी बराबर प्रकट होता हुआ है

2. बौद्धिकता— यह सत्य है कि साधारण मनुष्य अपने जीवन को जीवन जीने के लिए छोटे से छोटे काम के लिए भी भगवान के भरोसे रहते हैं। भगवान के भरोसे काम करने वाले को प्रेमचन्द कभी सच्चा मनुष्य नहीं मानते थे। उनकी धारणा थी कि प्रत्येक विपत्ति आने पर मनुष्य को भाग्य से नहीं बुद्धि से काम लेना चाहिए। बुद्धि के बल पर आदमी कई मुसीबतों से बच जाता है। प्रोफेसर मेहता भी बुद्धि को ही सर्वोपरि मानते हैं। प्रो. मेहता के माध्यम से प्रेमचन्द ने अपनी बौद्धिकता का परिचय दिया है। प्रो. मेहता बुद्धि के आधार पर ही हर कार्य करते हैं। सम्पादक ओकारनाथ से वे बुद्धि के महत्व का वर्णन इन शब्दों में करते है— श्धन को आप किसी अन्यास से बराबर फैला सकते है। लेकिन बुद्धि को, चरित्र को और रूप को, प्रतिभा को और बल को बराबर फैलाना तो आपकी शक्ति के बाहर है। छोटे—बडे का भेद केवल धन से ही तो नहीं होगा। मैंने बड़े—बड़े धन कुबेरों को भिक्षुकों के सामने घुटने टेकते देखा है और आपने भी देखा होगा। क्या यह सामाजिक विषमता नहीं है?ष

इस तरह से प्रेमचंद मनुष्य की बुद्धि को सर्वप्रथम मानते हैं और उनके बुद्धि पूर्वक किए गए कार्य को ही महत्व देते हैं। उपन्यास में भी उन्होंने बुद्धिमता का समर्थन किया है और राय साहब के जरिए भी उन्होंने बुद्धिवाद का सम्मान किया है।

3. कर्म की प्रधानता– मनुष्य के जीवन–दर्शन का मूलाधार कर्म योग है। भाग्य के भरोसे बैठे रहने वाले व्यक्ति को प्रेमचन्द मूर्ख मानते थे। जीवन के प्रति प्रेमचन्द की आस्था सुदृढ थी। जीवन के अतिरिक्त सभी शक्तियों को वे अस्वीकार करते थे। उनकी नजर में दैवी शक्तियों का कोई अस्तित्व नहीं है। स्वर्ग या नरक केवल जीवन को सुधारने के लिए बताए गए काल्पनिक मार्ग हैं। प्रत्येक व्यक्ति को निवृत्ति या प्रवृति में किसी एक मार्ग की चुन लेना चाहिए। इनमें वो किसी एक मार्ग पर चलने से व्यक्ति अपना उद्धार स्वयं कर सकता है। उनका मानना है कि ईश्वरीय तत्त्व की कोई जरूरत नहीं, यदि मनुष्य कर्म को ही सर्वोपरि मानता है। प्रो मेहता के माध्यम से प्रेमचन्द ने इस तथ्य की पुष्टि भी की है– ष्एकात्मकवाद या सर्वात्मवाद के अहिंसा तत्व को वे आध्यात्मिक दृष्टि से नहीं, भौतिकी दृष्टि से ही देखते थे। यद्यपि इन तत्वों का इतिहास के किसी काल में भी आधिपत्य नहीं रहा फिर भी मनुष्य जाति के सांस्कृतिक विकास में उनका स्थान बड़े महत्व का है। मानव समाज की एकता में मेहता का दृढ विश्वास था, मगर इस विश्वास के लिए उन्हें ईश्वर तत्त्व मानने की जरूरत न मालूम होती थी। प्रेमचन्द मानते थे कि मानव को निःस्वार्थ भाव से कर्म करते रहना चाहिए। सच्ची सेवा केवल अनासक्त भाव से किए गए कर्मों में रहती है। स्वर्ग प्राप्ति के लिए किए गए कर्मों में स्वार्थ वृत्ति रहती है। कर्मयोग के सदर्भ में प्रो. मेहता के माध्यम से प्रेमचन्द कहते है कि श्आत्मवाद और अनात्मवाद की खूब छानबीन कर लेने पर वह इसी तत्व पर पहुँच जाते थे कि प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों के बीच जो सेवा मार्ग है चाहे उसे कर्मयोग कहो वही जीवन को सार्थक कर सकता है वही जीवन को ऊँचा और पवित्र बना सकता है।ष प्रेमचंद मानते हैं कि दर्शन को समझने के लिए द्वैतवाद और अद्वैतवाद दो तत्व है और जिन आध्यात्मिक रूपों को हमने देखा ही नहीं उसमें जीवन का विकास खोजना निरर्थक है। इसलिए प्रेमचंद सेवा भावना वाले कर्मों को महत्व देते हैं।